INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VII-2nd Lang.	Department: Hindi	Class work
Lesson 2- संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिजाज हो.	Topics: **Q/Bank**	**PI File in portfolio-**

कठिन शब्दार्थ –

सुप्रसिद्ध – विख्यात , मशहूर

साक्षात्कार – भेंट , मुलाकात

संपादित – जिसे पूरा किया गया हो (काम), जिसे ठीक करके प्रकाशन के योग्य बनाया गया हो (समाचारपत्र , लेख आदि)

अंश – भाग , खंड , हिस्सा , छोटा टुकड़ा

कष्टसाध्य – जिसे करना कठिन हो , मुश्किल से होने वाला

हैसियत – आर्थिक सामर्थ्य , सामाजिक मान – मर्यादा , इज़्ज़त , रुतबा

धीरज – धैर्य , संतोष , सब्र , मन की स्थिरता

कद-काठी – शरीर की बनावट या संरचना , शरीर का आकार-प्रकार

दबदबा – प्रभाव , आतंक , रोब

भिड़ना – लड़ाई-झगड़ा कराना

जुझारू – जूझने वाला , लड़ने वाला , योद्धा , वीर , बहादुर

बेहतरीन – बहुत अच्छा , उत्तम , नेक

उम्मीद – आशा , अपेक्षा , आसरा , भरोसा , सहारा

मायूसी – मायूस होने का भाव , निराशा , उत्साह हीनता

व्यक्तित्व – निजी विशेषता

विस्मय – आश्चर्य, ताज्जुब, अचंभा

खीझ – वह क्रोध जो मन-ही-मन रहे, झुँझलाहट, भड़ास , खुंदक

ठेठ – जिसमें बनावटीपन न हो, शुद्ध , निपट , देशी

फिसड्डी – किसी काम में पिछड़ा हुआ , प्रतियोगिता या प्रयत्न आदि में सबसे पीछे रह जाने वाला , अकुशल

तुनुकमिजाज – मुँह फट

आक्रामक – आक्रमण करने वाला

जूझना- डटकर मुकाबला करना , संघर्ष करना, ताकत लगाकर कुछ करने की कोशिश करना

कद्र – गुण की परख , आदर , आदर-सत्कार , इज़्ज़त , प्रतिष्ठा , सम्मान

Lesson Video- https://www.youtube.com/watch?v=l1Hlh1CYNHc

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. धनराज पिल्लै किस खेल के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं?

उत्तर- धनराज पिल्लै हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं।

प्रश्न 2. धनराज का बचपन कहाँ बीता है?

उत्तर- धनराज का बचपन खिड़की नामक गाँव में बीता है|

प्रश्न 3. धनराज की पहली कार कौन-सी थी?

उत्तर- धनराज की पहली कार एक सेकेंड हैंड महेंद्रा अरमाडा थी।

प्रश्न 4. साक्षात्कार का क्या अर्थ है?

उत्तर- साक्षात्कार का अर्थ है किसी से मिलकर आमने-सामने बातचीत करना।

प्रश्न 5. धनराज पिल्लै का साक्षात्कार किसने लिया था?

उत्तर- विनीता पांडेय ने धनराज पिल्लै का साक्षात्कार लिया था।

प्रश्न 6. धनराज को सीनियर टीम में कब जगह मिली थी?

उत्तर- सन् 1986 में धनराज को सीनियर टीम में जगह मिली थी।

प्रश्न 7. धनराज पिल्लै के बड़े भाई का क्या नाम था?

उत्तर- धनराज पिल्लै का एक बड़ा भाई था जिसका नाम रमेश था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.धनराज ने अपनी जूनियर राष्ट्रीय हॉकी कब खेली? उस समय उनका शरीर कैसा था?

उत्तर- धनराज ने अपनी जूनियर राष्ट्रीय हॉकी की 1985 में मणिपुर में खेली। उस समय उनका शरीर बहुत दुबला-पतला था और चेहरा छोटे बच्चे जैसा था।

प्रश्न 2. धनराज का बचपन कैसा था?

उत्तर- धनराज का बचपन काफ़ी गरीबी में व्यतीत हुआ था। उनको आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा था। उनका एवं उनके भाइयों के पालन-पोषण में उनकी माँ को काफ़ी संघर्ष करना पड़ा था। धनराज को हॉकी खेलने के लिए और हॉकी स्टिक खरीदने तक के पैसे नहीं होते थे। वे पढ़ाई में भी फिसड्डी थे।

प्रश्न3. धनराज को किस बात की मायूसी हुई? यह कैसे खत्म हुई?

उत्तर- धनराज का विश्वास था कि उन्हें 1988 के ओलंपिक कैंप का बुलावा जरूर आएगा, पर 57 खिलाड़ियों की सूची में उनका नाम नहीं था। इससे उन्हें मायूसी हुई। यह मायूसी अगले साल ऑलविन एशिया कप के कैंप के चुनाव पर दूर हुई।

प्रश्न 4. धनराज के व्यक्तित्व की क्या विशेषता है?

उत्तर- उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता है कि वे भावुक हैं और दूसरों की तकलीफ़

को नहीं देख सकते। वे अपने मित्रों और परिवारजनों का बहुत सम्मान करते हैं। वे गलती होने पर माफ़ी भी माँग लेते हैं।

प्रश्न 5. धनराज किसे पहली ज़िम्मेदारी मानते थे?

उत्तर- अपने परिवार की आर्थिक तंगी को दूर करने को धनराज अपनी पहली ज़िम्मेदारी मानते थे। वे परिवार को बेहतर जिंदगी देना चाहते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1. किन विशेषताओं के कारण हॉकी को भारत का राष्ट्रीय खेल कहा जाता है?

उत्तर- सन् 1928 से लेकर 1956 तक भारत ने हर ओलम्पिक में हॉकी में स्वर्ण पदक हासिल किया। इस खेल ने गुलाम भारत को विश्व में एक पहचान दिलाई। इस खेल को राजा-महाराजाओं से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी बड़े चाव से खेला करते थे। पुराने जमाने के लोग पेड़ों की टहनियों से इस खेल को खेलते थे। यह खेल सीमित संसाधनों में खेला जा सकता है। इन सब कारणों से इसे भारत का राष्ट्रीय खेल माना जाता है।

प्रश्न2. धनराज पिल्लै के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?(मूल्यपरक प्रश्न)

उत्तर- धनराज पिल्लै के जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि यदि हमारे मन में आगे बढ़ने की चाहत हो, मेहनत और लगन हो तो आर्थिक या पारिवारिक स्थितियाँ कभी भी बाधक नहीं बनतीं। मनुष्य सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ते रहता है। जैसे धनराज पिल्लै साधारण परिवार से संबंध रखते थे। उनके पास हॉकी स्टिक भी नहीं होती थी लेकिन उनकी मेहनत और लगन ने उन्हें हॉकी का महान खिलाड़ी बना दिया।